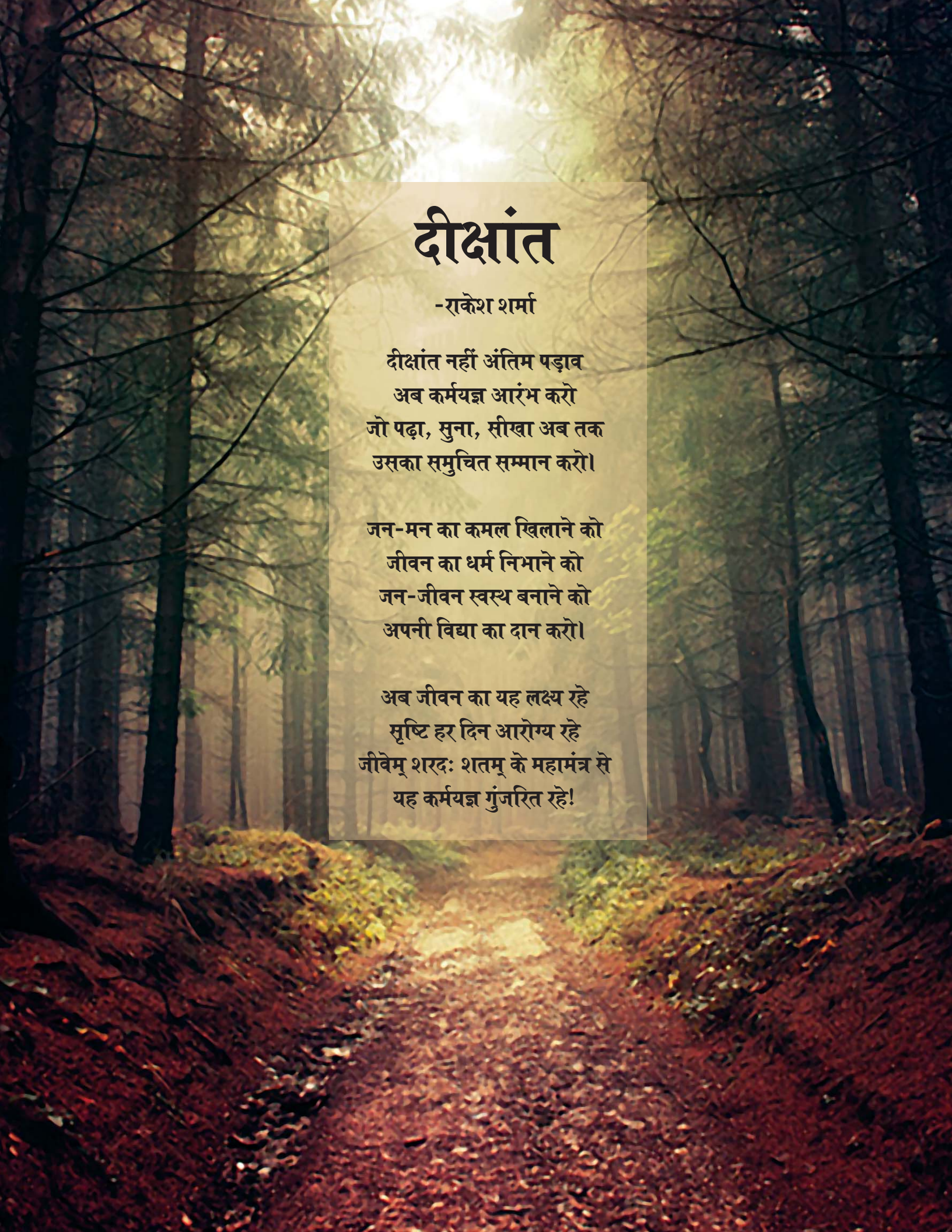

दीक्षांत

-राकेश शर्मा

दीक्षांत नहीं अंतिम पड़ाव
अब कर्मयज्ञ आरंभ करो
जो पढ़ा, सुना, सीखा अब तक
उसका समुचित सम्मान करो।

जन-मन का कमल खिलाने को
जीवन का धर्म निभाने को
जन-जीवन स्वस्थ बनाने को
अपनी विद्या का दान करो।

अब जीवन का यह लक्ष्य रहे
सृष्टि हर दिन आरोग्य रहे
जीवेम् शरदः शतम् के महामंत्र से
यह कर्मयज्ञ गुंजरित रहे!